अध्याय द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनुसंधानकर्ता के लिये उपयोगी और महत्वपूर्ण होता है। क्यों कि यह उसके अनुसंधान की मौलिकता को आधार प्रदान करता है। क्षेत्र में हुये कार्य, उसकी विधि तथा निष्कर्ष के आधार पर अनुसंधानकर्ता समस्या चयन, उसकी रूपरेखा तथा शोधविधि का निर्माण करता है।

किशोरवयीन विद्यार्थियों की समस्याओं तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन से संबधित शोधकार्यो की सीमीत संख्या होने की वजह से इस क्षेत्र में अधिकतर रिक्त जगह मिलती है। इस दृष्टि से भी उपर्युक्त क्षेत्र मे अध्ययन करना तर्कसंगत है। प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एवंम पुनरावलोकन प्रस्तुत किये जा रहे है।

जॉनसन एवं अन्य (1973) ने "मानवीय लैंगिक व्यवहार एवं लैंगिक शिक्षा" की अपनी रिपोर्ट में यह पाया की मीडिया, प्रिन्ट मीडिया तथा समवयस्क समूह का दबाव युवा वर्ग पर प्रभावकारी होता है।

डिवाईन (1975) "स्वास्थ्य शिक्षण – युवा लोगों को क्या जानने की इच्छा है?" संबधित रिपोर्ट में 8 से 17 आयु के स्कॉटिश छात्रों के उन अभिभावकों, शिक्षकों एवं स्वास्थ्य व्यावसायिकों पर तुलनात्मक अध्ययन किया जो इन बच्चों के स्वास्थ्य शिक्षा कि आवश्यकता का विचार रखते थे।

देसाई (1985) ने लैगिक शिक्षा में लैंगिक शिक्षण के सम्बन्ध में छात्र एवं छात्राओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होंने यह पाया कि लैंगिक शिक्षा से छात्रों की अभिवृत्ति में परिवर्तन आ रहा है तथा लैंगिक शिक्षा के विचारों से छात्रों का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समझ तथा समायोजन में सुधार हो रहा है।

चानपुतावीत एवं अन्य (1988) ने बैंकाक के माध्यमिक स्कूल के छात्रों एवं शिक्षकों का युवा अवस्था के प्रजोत्पादक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में यह पाया कि 77.4 प्रतिशत छात्र सेक्स से सम्बन्धित सूचना मैग्जीन से प्राप्त करते है और शिक्षक अधिकाधिक सेक्स से सम्बन्धित जानकारी मैग्जीन, दोस्तों, टेलीविजन एवं रेडियो से प्राप्त करते है।

अहमद (1992) ने 9वीं कक्षा के समान सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों के सृजनात्मकता का उनके मूल्य, शिक्षक केन्द्रीय व्यवहार एवं मानसिक स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। अध्ययन में यह पाया गया है कि 9वीं कक्षा के छात्रों के सृजनात्मकता पर मानसिक स्वास्थ्य के घटक अंतर्मुखी एवं बहीर्मुखी एवं न्यूरोसिस स्थिरता का कोई अन्तर नहीं है।

टंडन, यू. (1994) ने उच्च और सामान्य आई. क्यू. रखने वाले किशोरों की क्रियात्मकता, सामाजिक आर्थिक स्तर एवं शैक्षणिक उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में स्वयं कल्पना का तुलनात्मक अध्ययन किया।

टिक्कू, एस. एवं जगदीश (1997) ने स्कूली छात्रों का प्रेरणा उपलब्धि तथा मानसिक स्वास्थ्य के बीच के सम्बन्ध का अध्ययन किया तथा पाया कि स्कुली छात्रो के प्रेरणा उपलब्धी तथा मानसिक स्वास्थ्य के बिच धनात्मक सहसंबध है।

बीग, डी. एवं नन्दा, पी. (1999) ने किशोरवयीन विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहारों का अध्ययन किया है, अपने अध्ययन मे उन्होने यह पाया कि, किशोरवयीन बालिकाओं कि अपेक्षा बालक अधिक आक्रमक होते है।

जॉर्ज, सी. एवं राजेंद्रन, के. (2007) ने लेट ॲडोलेसन्ट बालकों के मूल्यों के अध्ययन में यह पाया कि किशोरवयीन विद्यार्थियों के जीवन में मूल्यों की अत्यधिक आवश्यकता है। सामाजिक मूल्य एवं व्यक्तिगत मूल्य किशोरवयीन विद्यार्थियों पर प्रभावकारी है। किशोरवयीन विद्यार्थियों का लिंगगत, आवासीय, परिवार के सदस्यों की संख्या, महत्वाकांक्षा, एवं मित्रों की संख्या का उनके मूल्य के प्रति सार्थक अन्तर पाया गया है।

जैन, एम. एवं जैन, जे. (2007) ने किशोरवयीन विद्यार्थियों में कोचिंग की भूमिका एवं अभिभावकों के प्रोत्साहन से होने वाली शैक्षणिक दुश्चिंता का अध्ययन किया है। अपने अध्ययन में उन्होंने यह पाया कि जिन किशोरवयीन विद्यार्थियों के अभिभावकों को अधिकतर प्रोत्साहन होता है उनमे शैक्षणिक दुश्चिंता कम पाई गयी।

सिंग,एम. एवं चौधरी, ओ.पी. (2007) ने उच्च एवं निम्न भावनात्मक बुद्धिमता रखने वाले किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च एवं निम्न भावनात्मक बुद्धिमता का किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में यह भी पाया गया है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमता वालें किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य उच्च होता है।

वर्षनी, एस.पी. (2007) ने अपने अध्ययन में यह पाया की बालक एवं बालिकाओं के अभिभावकों द्वारा दिये गये प्रोत्साहनों का उनके भावनात्मक बुद्धिमता पर धनात्मक प्रभाव पडता है।

ऑडिछाया, एस.एवं जैन, पी. (2009) ने एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के किशोरवयीन बालक तथा बालिकाओं के भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया है। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरवयीन बौलक बालिकाओं की अपेक्षा अधिक भावनात्मक परिपक्वता रखते है।

चावला, ए. एवं अन्य (2009) ने ग्रामीण क्षेंत्रों के किशोरवयीन बालिकाओं मे स्वः सम्मान के पोषण का अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया है कि दूसरों के हस्तक्षेप का ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं के स्वः सम्मान पर धनात्मक प्रभाव पडता है। व्याख्यान, चर्चा, अध्ययन की सामग्री का वितरण जैसे शैक्षणिक पैकेजो से किशोरवयीन बालिकाओं मे उच्च स्वःसम्मान विकास मे मद्द मिलती है।

कालिया, ए. के. एवं तोमर, एस. (2009) ने किशोरवयीन विद्यार्थियों के अध्ययन कौशल पर उनके आवास एवं लिंग के प्रभावों का अध्ययन किया है।शोध मे यह पाया गया है

कि ग्रामीण क्षेत्र के किशोरवयीन बालको मे शहरी क्षेत्र के किशोरवयीन विद्यार्थियों से अधिक अध्ययन कौशल्य पाये गये। किशोरवयीन विद्यार्थियों में बाहर से नोट्स एवं निबन्ध लिखने के कौशल्यों का विकास बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया है।